Dated - 18/8/2020

B.A Part-2 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

नैतिक निर्णय के विषयवस्तु की व्याख्या कीजिए।

Ans:- नैतिक निर्णय इस ऐच्छिक क्रियाओं पर देते हैं। प्रत्येक ऐच्छिक क्रिया के दो रूप होते हैं - (क) आन्तरिक और (ख) वाह्य। जब हम नैतिक निर्णय देते हैं तो किस पहलू को ध्यान में रखकर आन्तरिक अथवा वाह्य। दर्शन के विचारकों में मतभेद है। उपयोगितावादी विचारक के अनुसार, नैतिक निर्णय क्रिया के वाह्य रूप के आधार पर देना चाहिए। इनके अनुसार नैतिक निर्णय परिणाम के आधार पर दिया जाता है। यदि किसी कार्य का परिणाम अच्छा हो तो आचरण नैतिक दृष्टिकोण से अच्छा समझा जाएगा और यदि किसी कार्य का परिणाम बुरा हो तो आचरण नैतिक दृष्टिकोण से बुरा समझा जाएगा। काण्ट एवं बटलर का मत है नैतिक क्रिया के आन्तरिक उद्देश्य के आधार पर दिया जाता है न कि परिणाम पर। इनके अनुसार नैतिक निर्णय में परिणाम पर विचार नहीं किया जाता और यदि कार्य का आन्तरिक उद्देश्य ठीक है तो वह कार्य अच्छा माना जाता है, भले ही उसका परिणाम अच्छा न हुआ हो। अतः यदि आन्तरिक उद्देश्य बुरा हो तो वह कार्य बुरा समझा जाएगा, भले ही उसका परिणाम अच्छा हुआ हो।

अतः नैतिक निर्णय व्यक्ति के प्रयोजन के आधार पर दिया जाता है। दूसरे शब्दों में यह निर्णय उद्देश्य तथा साधन दोनों के आधार पर दिया जाता है। गाँधीजी भी यही मानते थे। वे स्वतंत्रता चाहते थे परन्तु उनका मत था कि इसकी प्राप्ति अहिंसा के पवित्र ढंग को अपनाकर होनी चाहिए। वे साध्य और साधन दोनों की पवित्रता पर जोर देते थे। उद्देश्य के अनुरूप ही साधन होना चाहिए। साध्य तथा साधन में सामंजस्य का होना जरूरी है लेकिन प्रयोजन से व्यक्ति के चरित्र का पता चलता है। मैकेंजी के शब्दों में "Moral judgement is not properly passed upon a thing done but upon a person doing."

—x—